उपसंहार

उपसंहार

नाटक विधा दृक्श्राव्य होने के कारण अन्य विधाओं से अलग विधा है। दर्शकों के लिए प्रस्तुत विधा अधिक रमणीय होती है। उपन्यास, कहानी आदि विधाओं में रचनाकार अपनी रचनाओं में जो कहता है उसे नाटककार अपने नाटक में दर्शकों के सम्मुख रंगमंच पर उपस्थित कर सकता है। इस विधा का प्रभाव गहरा एवं व्यापक होता है।

कुसुम कुमार के नाटकों का अनुशीलन करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आए हैं, उनका निचोड़ यहां हम सार रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

कुसुम कुमार साठोत्तरी हिंदी साहित्य की एक ऐसी रचनाकार है, जिन्होंने अपने साहित्य के द्वारा भारतीय मूल्यों के ऱ्हास को दर्शाया है। उनका समग्र साहित्य अपने जीवन के अनुभूतियों को प्रतिबिंबित करता है। कुसुम कुमार का जीवन मध्यमवर्गीय परिवार में बीता है। देश की राजधानी दिल्ली में जन्में कुसुम कुमार को सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक दृष्टिकोण से किसी भी बात की कमी नहीं थी। माता-पिता धर्मपरायण, कर्मठ, परिश्रमी, शिक्षित और नीतीपरक पाठ पढ़ानेवाले होने के कारण कुसुम कुमार को अच्छे संस्कार, अच्छी शिक्षा घर से ही प्राप्त हुई है। पारिवारिक जीवन में उनके पति स्वदेश कुमार ने उनका महत्त्वपूर्ण साथ दिया है।

कुसुम कुमार मिलनसार और मद्दगार प्रकृति की है। बहुभाषज्ञ कुसुम कुमार को हिंदी, मराठी, अंग्रेजी आदि भाषाओं की जानकारी है। उन्होंने बुद्धि चातुर्य के आधार पर मराठी भाषा सीखकर मराठी रंगभूमि के अनेक श्रेष्ठ नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया है।

कुसुम कुमार एक साहसी लेखिका है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से समाज में स्थित कुरीतियों, राजनेताओं तथा अधिकारियों के पाखंडी और स्वार्थनीति का निर्भिकता से पर्दाफाश किया है।

कुशाग्र बुद्धिमानी कुसुम कुमार का हिंदी नाट्य जगत् में अपना अलग रूतबा है। कुसुम कुमार दो बच्चों की मां है। उनकी ममता-मूर्ति मां का रूप सराहनीय है। कुसुम कुमार का वैदिक धर्म के प्रति अगाध प्रेम है।

कुसुम कुमार शिक्षा-प्रेमी रचनाकार हैं। कुसुम कुमार ने दो वर्ष तक अध्यापन का कार्य भी किया है। शिक्षा के प्रति अतीव प्रेम उनके द्वारा लिखित नाटक 'ओम् क्रांति क्रांति' में स्पष्ट झ लकता हुआ दिखाई देता है।

बहुआयामी व्यक्तित्ववाली कुसुम कुमार कला-प्रेमी हैं। उनकी कला का आविष्कार नाटक, उपन्यास, कविता और चित्रकारी में हुआ है। कुसुम कुमार जन्मजात कलाकार हैं। उनके चुनिंदा चित्रों की प्रदर्शनी यह सिध्द कर देती है कि सचमुच कुसुम कुमार कला-प्रेमी हैं।

कुसुम कुमार नारी होने के नाते उनके साहित्य में नारी पात्र प्रमुखता से पाठकों के सामने उभरकर आते हैं। उन्होंने नारी के विभिन्न रूपों का यथार्थ चित्रण किया है। नारी मन की चतुर चितेरी कुसुम कुमार नारी मन की गुत्थियों को सुलझाने में सफल रही है।

कुसुम कुमार का रहन - सहन सादगीयुक्त है। उनका व्यक्तित्व पारंपारिक भारतीय नारी जैसा लगता है। कुसुम कुमार को निरामिष सादा भोजन पसंद है। कुसुम कुमार अच्छे स्वास्थ्य के लिए शाकाहारी की हिमायती है। कुसुम कुमार अपने जीवन में हमेशा प्रयत्नशील रही है। उन्होंने प्रयत्नशीलता के आधार पर जीवन के हर पड़ावों पर जीत हासिल की है। मध्यमवर्गीय परिवार की दिल्ली जैसे महानगर में क्या हालत होती है, इसका यथार्थ चित्रण अपने साहित्य में कुसुम कुमार ने किया है। उनके द्वारा लिखित साहित्य में मध्यवर्गीय परिवार का दुःख, आर्थिक विवशता को प्रमुखता से उजागर करता है। उन्होंने जो स्वयं देखा, भोगा, उसको अपने साहित्य में चित्रित किया है। कुसुम कुमार ने काव्य, नाटक, उपन्यास जैसी वैविध्यपूर्ण विधाओं में लेखन किया है। कुसुम कुमार के साहित्य में उनके व्यक्तित्व के पहलुओं का प्रतिबिंब नजर आता है। उनके साहित्य में व्यक्तित्व और कृतित्व की झलक दिखाई देती है। कुसुम कुमार प्रयोगधर्मी नाटककार के रूप में जानी जाती हैं। उनके सभी नाटक प्रयोगधर्मिता की दृष्टि से पूर्णतः सफल हुए हैं।

कहना सही होगा कि कुसुम कुमार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। एक सशक्त नाटककार, एकांकीकार, उपन्यासकार साथ ही साथ एक अच्छी चित्रकार भी हैं। उनकी यह पहचान पाठकों को प्रभावित किए बिना नहीं रहती।

साठोत्तरी हिंदी नाटकों में कुसुम कुमार के नाटक अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। कुसुम कुमार के सभी नाटक प्रयोगधर्मी है। शैली, शिल्प और कथ्यगत प्रवृत्तियों की दृष्टि से कुसुम कुमार के नाटक विशेष महत्व रखते हैं। शैली, शिल्प और कथ्य, इन तीनों स्तरों पर नयी प्रयोगधर्मिता प्रवृत्ति के कारण कुसुम कुमार के नाटक रंगमंचीय दृष्टि से सफल हैं।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में शिक्षा व्यवस्था में फैली अराजकता की स्थिति को दिखाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत नाटक में शिक्षकों की उत्तरदायित्वहीनता और विद्यार्थियों की विवशता दिखाई देती है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक तीन दृश्यों में संपन्न हुआ है। प्रस्तुत नाटक में नौ स्त्री पात्र और पांचू केवल एक मात्र पुरूष पात्र है। स्त्री पात्रों की संख्या अधिक रखना यह लेखिका के प्रयोगधर्मिता का परिचायक है। लेखिका ने प्रस्तुत नाटक के माध्यम से सामूहिक क्रांति को महत्त्व दिया है। कोई भी क्रांति सामूहिक रूप से करने से इसमें निश्चित सफलता मिलती है। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककारने शिक्षा क्षेत्र में फैली बुराइयों, अराजकता और दोषी शिक्षक वर्ग को दिखाने का प्रयास किया है। क्लासरूम की क्रांति पूरे शिक्षा विभाग के प्रति की गई क्रांति है, जिसमें शिक्षा व्यवस्था में आमूल परिवर्तन हो सके। यही प्रस्तुत नाटक का प्रमुख उद्देश्य रहा है। प्रस्तुत उद्देश्य की परिपूर्ति में लेखिका को पूर्णतः सफलता मिली है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक बहुचर्चित रहा है। प्रस्तुत नाटक रंगमंचीय दृष्टि से एक सफल नाट्यरचना है। प्रस्तुत नाटक हरिजन लड़की शेफाली और समाजसेवी सत्यमेव दीक्षित पुत्र बकुल के माध्यम से राजनीतिक छल-प्रपंच का पर्दाफाश करता है। बकुल राजनीति में स्वार्थ साधने के लिए शेफाली के साथ प्यार का नाटक करता है। शेफाली जब

उनके स्वार्थनीति को जान लेती है तब वह विद्रोही नारी के रूप में प्रस्तुत होती है। शेफाली स्वभाव से भोली - भाली किन्तु स्वाभिमानी लड़की है। वह अपनी स्वाभिमानीप्रवृत्ति के कारण घिनौनी राजनीति के लिए पवित्र प्रेम का बलिदान नहीं करना चाहती। परिस्थितिवश शेफाली की मां शेफाली को विवाह के लिए बाध्य करना चाहती है। लेकिन शेफाली का स्वाभिमान परिस्थिति के सामने हार नहीं मानता । बकुल का विवाह अंततः किरन से हो जाता है। कथ्य के स्तर पर यह नाटक एक हरिजन लड़की और उच्चवर्गीय नेता के पुत्र की प्रेम कहानी के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था की गिरती दशा और राजनीतिक स्वार्थ का पर्दाफाश करता है। नाटक में रंगमंच निर्देश, ध्वनि एवं संगीत की व्यवस्था, प्रकाश योजना, दृश्य सज्जा आदि का सुंदर निर्वाह हुआ है। जिसमें नाटककार कुसुम कुमार के नाट्य कौशल्य का दर्शन होता है। भाषा, शैली, शिल्प और उद्देश्य में लेखिका कुसुम कुमार को पूर्णतः सफलता मिली है।

कुसुम कुमार दूवारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में सरकारी कार्यालयों की अव्यवस्था से परेशान आदमी का स्वाभाविक और यथार्थ चित्र दृष्टव्य है। इसलिए यह नाटक कथ्य के स्तर पर व्यंग के माध्यम से पाठकों की मानसिक संवेदना और अनुभूति को जगाने में सफल रहा है। माधोसिंह पेंशन के मामले में दफ्तर में जगह - जगह पर भटकता रहता है। फिर भी पेंशन का मामला वहीं का वहीं रह जाता है। सरकारी दफ्तरों में फैली भ्रष्टता, डॉक्टरों की हृदयहीनता, नेताओं के झूठे आश्वासन के कारण माधोसिंह को पेंशन के मामले में सरकारी दफ्तर में आठ महीने रगड़ना पड़ता है। फिर भी माधोसिंह को पेंशन नहीं मिलती । अंततः सहनशीलता की मर्यादा को तोडकर प्रथम माधोसिंह की बेटी नीति आत्महत्या कर लेती है। बाद में सरकारी दमन नीति के सामने हार कर माधोसिंह भी अपनी जीवन लीला समाप्त कर देता है। नाटक में माधोसिंह की मृत्यु के बाद पेंशन की चिट्टी मिलती है, जिसे कमला स्वीकार नहीं कर सकती, क्योंकि इसे स्वीकार करने का उसके पास औचित्य शेष नहीं। इस तरह भ्रष्टाचार पर आधारित व्यवस्था का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करना नाटक का मूल उद्देश्य है। प्रस्तुत नाटक का कारूणिक वातावरण संवेदना और नाट्यानुभूति के स्तर पर पाठक या श्रोता को झकझोर कर देता है। प्रस्तुत नाटक में कुसुम कुमार ने पात्रों के नाम मिस्टर 'ए.', 'पी.', 'क्यू' ऐसे संक्षिप्त नाम धरे हैं। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से सरकारी दफ्तरों में फैंली अव्यवस्था, भ्रष्टता, अराजकता आदि की सच्ची तस्वीर उतारने में लेखिका ने सराहनीय प्रयास किया है।

कुल मिलाकर कुसुम कुमार ने तीनों नाटक कथ्य के स्तर पर पाठकों या श्रोताओं को सोचने -समझने के लिए मजबूर करते हैं।

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों का तात्विक विवेचन विद्वानों स्वीकृत नाटक संबंधी आधुनिक तत्वों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक की कथावस्तु स्वाभाविक, रोचक, नाटकीय और प्रभावशाली बनी है। सुगठित चरित्रांकन, गत्यात्मक घटनाएँ कथावस्तु को

प्रवाहमयी बना देती है। प्रस्तुत 'नाटक' पाठक या दर्शक पढ़ते अथवा देखते समय नाटक में वर्णित कालेज जीवन से परिचित होते हैं।

विवेच्य नाटक के चरित्र चित्रण में पात्र अपने मनोभावों को व्यक्त करत हैं। कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक सिध्द हुए हैं।

विवेच्य नाटक में व्यंग्यात्मक संवाद रोचक बने हैं। लेखिका ने संवादों के माध्यम से अपने विचार अथवा उद्देश्य को दर्शकों, पाठकों तथा पहुंचाने का कार्य किया है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में कथानक को गति देनेवाले संवाद, संक्षिप्त संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद रोचक दिखायी देते हैं।

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में देशकाल तथा वातावरण पात्रों के चरित्र में यथार्थता लाने के लिए नाटकीय घटनाओं के अनुकूल वातावरण की निर्मिति की है। देशकाल तथा वातावरण में समन्वय करके लेखिका ने नाटक में यथार्थता प्रदान की है।

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में भाषा, शैली, व्यंग्यात्मकता और नाट्यानुकूलता से युक्त है। प्रस्तुत नाटक में व्यंग्यात्मक भाषा रोचक बनी है। व्यंग्यात्मक भाषा के माध्यम से लेखिका ने सामाजिक विसंगतियों को चित्रित किया है। कुसुम कुमार ने ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है, वे शब्द अर्थबोध में बाधा नहीं बनते। इसमें अंग्रेजी वाक्याशों का प्रयोग किया है। प्रस्तुत नाटक में प्रश्नोत्तर, व्यंग्यात्मक, आवेगपूर्ण शैली का प्रयोग किया गया है। जिसमें लेखिका का अभिव्यक्ति कौशल दिखाई देता है।

प्रस्तुत नाटक शिक्षा व्यवस्था पर आधारित हैं, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा भ्रष्ट लेक्चररों के विरोध में की गई क्रांति का महत्त्व प्रतिपादित किया है। प्रस्तुत कालेज की छात्रा क्रांति में सफल होती है। लेखिका ने महिला कालेज में की गई सामूहिक क्रांति का महत्त्व प्रतिपादित किया है। अपने उद्देश्य की पूर्ति में लेखिका सफल हुई है।

' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक का शीर्षक भी अर्थपूर्ण और सार्थक है। शांति का पक्ष लेकर चलनेवाली भ्रष्ट प्राध्यापिकाओं के विरोध में ' ओम् क्रांति क्रांति ' का नारा लगाकर महिला कालेज की लड़कियों द्वारा परिवर्तन लाना प्रशंसनीय है। जिससे नाटक का शीर्षक सार्थक और प्रेरणास्त्रोत बना है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' सुनो शेफाली ' नाटक की कथावस्तु कौतुहल जगानेवाली है। कथावस्तु में रोचकता, आकर्षकता, एवं प्रभावोत्पादकता दिखाई देती है। कथावस्तु में घटनाओं का संगठन करके इसमें प्रवाहमयता दिखाई देती है। जो आदि से लेकर अंत तक पाठकों, दर्शकों में अभिरूचि उत्पन्न करती हैं।

' सुनो शेफाली ' नाटक के पात्र प्रतीकात्मक है। शेफाली नारी स्वाभिमान, आत्मसम्मान का प्रतीक है। बकुल स्वार्थी बेटे के रूप में जीवन मार्ग पर भटके व्यक्ति का प्रतीक है। नाटक में चित्रित मनन आचार्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, जो नाटक की नायिका शेफाली को स.,र्थन देता है। प्रस्तुत नाटक केपात्र नाटकीय कथासूत्र को आगे बढ़ाने में सहायक सिध्द हुए हैं।

' सुनो शेफाली ' नाटक में संवाद पात्रों के क्रिया - कलाप और विचार अभिव्यक्त करने के लिए सहायक है। कथा को गति देनेवाले संवाद, पात्रानुकूल संवाद, मनोभावों को व्यक्त करनेवाले संवाद पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वंद्व को स्पष्ट करते हैं, जो कथानक को संप्रेषणीय बनाने में सहायक है।

प्रस्तुत नाटक में देशकाल तथा वातावरण का चित्रण तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरुप ही हुआ है। स्थल, काल तथा वातावरण में अन्विति से लेखिका ने नाटकीय घटनाओं में यथार्थता, सजीवता लायी है।

' सुनो शेफाली ' नाटक की भाषा मे सशक्तता, गंभीरता दिखाई देती है। जिससे पात्रों के मनोभाव अभिव्यक्त हैं। चित्रात्मक, काव्यात्मक और मिश्रित भाषा के प्रयोग से नाटक में सजीवता, यथार्थता आयी है। भाषा में अंग्रेजी शब्द आये हैं, जो अर्थबोध में कहीं भी बाधा नहीं बनते।

' सुनो शेफाली ' नाटक में आवेगपूर्ण, व्यंग्यात्मक और वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। जिससे नाटक में रोचकता, आकर्षकता, प्रवाहमयता आयी हैं।

' सुनो शेफाली ' नाटका का उद्देश्य सफल है; जिसमें हरिजन युवती का स्वाभिमान स्वार्थी राजनेता का पर्दाफाश कर देता है।

प्रस्तुत नाटक का शीर्षक कौतुहलवर्धक है। लेखिका शेफाली को कुछ सुनाना चाहती है, क्या सुनाना चाहती है, जिसके के लिए कौतुहलवश पाठक, दर्शक नाटक का आस्वाद लेते हैं। नाटक का शीर्षक सार्थक बना है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक की कथावस्तु बिना किसी व्यवधान के सीधे मानसिक एवं वैचारिक स्तर पर प्रभावित करनेवाली है। कथावस्तु में रोचकता, आकर्षकता, कौतुहलता आदि विशेषताएँ विद्यमान हैं। नाटक की कथावस्तु अपेक्षाकृत अधिक कसी हुई सुगठित और सुसम्बध्द है।

नाटक में चित्रित प्रमुख पात्र पाठकों या दर्शकों में करुणा जगाते हैं। पात्रों के चरित्र - चित्रण में यथार्थता का दर्शन होता है। जिससे पाठक या दर्शक भाव - विभोर हो जाते हैं।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में संवाद पाठकों या दर्शकों में अभिरुचि, जिज्ञासा, निर्माण करते है। प्रस्तुत नाटक में पात्रानुकूल संवाद, संक्षिप्त संवाद रोचक बनें हैं। जिससे नाटक में सरसता आ गयी है। इसमें संवाद कई भी बोझील नहीं बनें हैं।

प्रस्तुत नाटक के देशकाल वातावरण में वर्णनात्मकता, चित्रात्मकता, यथार्थता दिखाई देती है। प्रस्तुत नाटक में वातावरण सजीव और चित्रात्मक है। जिससे नाटक के पात्रों में यथार्थता के दर्शन होते हैं। देशकाल तथा वातावरण का यथार्थ और हृदयग्राही चित्रण द्वारा पात्रों के व्यक्तित्व में स्पष्टता आ गई है।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में कुसुम कुमार ने कथ्य, पात्र, संवाद एवं अभिनय आदि को ध्यान में रखकर भाषाशैली का प्रयोग किया है। व्यंग्यात्मक भाषा दर्शकों या पाठकों को संवेदना

के स्तर पर प्रभावित करती हैं। प्रस्तुत नाटक में अंग्रेजी वाक्यांशों का प्रयोग किया है, जिससे अर्थबोध में बाधा उत्पन्न नहीं होती। ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में भावात्मक, प्रश्नोत्तर और कुतूहलपूर्ण शैली का प्रयोग किया है। जिससे पाठकों या दर्शकों में जिज्ञासा, रूचि बढ़ाने में सहायक है।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक का शीर्षक सार्थक है। नाटक में ' दिल्ली ' राजसत्ता का प्रतीक है, जिसमें माधोसिंह जैसे सामान्य व्यक्ति का कोई सुननेवाला नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन देखने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि कुसुम कुमार द्‌वारा लिखित विवेच्य नाटकों में आधुनिक नाटकों के तत्त्वों का निर्वाह अच्छी तरह से हुआ है।

नारी मानव जीवन का महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक घटक है। वर्तमान युग के साहित्य की हर विधा में नारी जीवन के विविध रूप, नारी की संवेदना आदि का प्रतिबिंब नजर आता है। हिंदी नाटकों में नारी जीवन के विभिन्न आयाम दिखाई देते हैं। कुसुम कुमार के नाटकों में नारी का चित्रण विविध रूपों में दिखाई देता है।

कुसुम कुमार ने 'ओम् क्रांति क्रांति', 'सुनो शेफाली' और 'दिल्ली उँचा सुनती है' इन नाटकों में नारी के माता के रूप में दया, क्षमा, ममता, स्नेह आदि का यथार्थ चित्रण किया है। माता अपने संतान के प्रति अटूट कर्तव्य बंधनों के कारण ही वह अपना अस्तित्व बनाये रखती है। आदर्श माता अपनी संतानों के लिए हमेशा मार्गदर्शिका होती है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में जोशी आंटी आदर्श माता के रूप में चित्रित है। 'सुनो शेफाली' नाटक में शेफाली की मां एक सहज वात्सल्य एवं त्यागमयी जननी है।

भारतीय संस्कृति में नारी के पत्नी रूप का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। विधाता ने नारी को पुरूष के पूरक रूप में बनाया है, इसलिए नारी को अर्धांगिनी कहा जाता है। कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित नारी का पत्नी रूप पतिधर्मपरायण रूप में प्रस्तुत है।

कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित बहनें अपनी 'स्व' रक्षा के लिए अपने निश्चय पर अड़िग रहती हुई दिखाई देती है। कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित नारी के कन्या रूप में चित्रित नारी, वैयक्तिक धरातल पर परिवार, प्रेमी के विरोध में संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में मेनका एक आदर्श कन्या के रूप में चित्रित है। 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' नाटक में चित्रित कन्या रूप पाठकों, दर्शकों में करूणा जगानेवाला है। नारी के अन्य रूप में विद्रोही प्रेमिका अपना स्वाभिमान जताने के लिए प्रेमी के विरोध में विद्रोह कर बैठती है।

कुसुम कुमार ने अपने नाटक 'सुनो शेफाली' और 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' में नारी को नायिका रूप में चित्रित किया है। जिनका कथा विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है।

शिक्षा के कारण नारी अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति सज़ग होकर अपनी सत्व की रक्षा के लिए साहस से काम कर रही है। कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में साहसी नारी का रूप विशेष उल्लेखनीय है। जो आज की नारी को पथ प्रदर्शन करनेवाला है।

त्याग ही नारी की सबसे बड़ी देन है। नारी पति, परिवार, समाज के लिए अपने आपको न्योछावर कर देती है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में शेफाली की मां त्याग की प्रतिमूर्ति है, जो अपने पति, परिवार के लिए कष्ट उठाती है।

आज की शिक्षित नारी का स्वाभिमान जाग उठा है। स्त्री को अपना स्वाभिमान जताने के लिए समाज, परिवार, प्रेमी के विरोध में संघर्ष करना पड़ रहा है। 'सुनो शेफाली' नाटक में स्वाभिमानी शेफाली अपने परिवार तथा प्रेमी के विरोध में संघर्ष करती हुई नजर आती है।

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में चित्रित नौकरीपेशा नारी एक ओर अपने कर्तव्य के प्रति एकनिष्ठ है, तो दूसरी ओर कर्तव्यभ्रष्ट, अनुशासनहीन नारी के रूप में चित्रित है। 'ओम् क्रांति क्रांति. नाटक में मिसिज पंत, मिस सिंह आदर्श लेक्चरर के रूप में चित्रित है, तो दूसरी ओर मिसिज दानी कर्तव्यभ्रष्ट नौकरी पेशा नारी के रूप में भी चित्रित की गई है।

आज की शिक्षित नारी सभी स्तरों पर नेतृत्व कर रही है। 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में थैलमा नेतृत्व करनेवाली नारी के रूप में चित्रित है। छात्र-आंदोलन का नेतृत्व करनेवाली थैलमा एक निड़र, साहसी रूप में चित्रित है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' और 'सुनो शेफाली' नाटक में नारी का विद्रोही रूप भी दिखाई देता है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में चित्रित केवल कैंटीन बॉय को छोड़कर सभी के सभी पात्र नारी पात्र हैं। यह विशेषता केवल कुसुम कुमार के प्रस्तुत नाटक में ही पायी जाती है।

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में चित्रित समस्याओं को देखने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि कुसुम कुमार ने समाज में जिन समस्याओ को करीब से देखा है, उन समस्याओं को अपने नाटकों में सहजता के साथ चित्रित किया है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में जोशी आंटी का जीवन विधवा समस्या से संबंधित है। लेखिका प्रस्तुत पात्र के माध्यम से यह सूचित करना चाहती है कि भारतीय विधवा नारी को जोशी आंटी बनना चाहिए। जिसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं है। जोशी आंटी पात्र के माध्यम से लेखिका ने अपना साफ तथा उदात्त दृष्टिकोण दर्शकों तथा पाठकों के सामन रखा है।

भारत के सरकारी अस्पतालों में ईमानदार डॉक्टरों का अभाव है। प्रस्तुत समस्या को लेखिका ने ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' इस नाटक में चित्रित किया है। सरकारी अस्पतालों के डॉक्टर रोगियों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। रोगियों को मुफ्त में मिलनेवाली दवाइयाँ वे बाहर बेच

देते हैं। इसमें पैसा कमाकर भ्रष्टाचार करते हैं। प्रस्तुत समस्याओं के प्रति लेखिका ने गंभीर चिंता प्रकट की है।

आत्महत्या की समस्या को लेखिका ने अपने नाटक ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' में चित्रित किया है। अर्थाभाव और मनोरुग्नता से पीड़ित लोग आत्महत्या करते हैं। प्रस्तुत नाटक की नीति इस समस्या का अच्छा उदाहरण है।

अविवाहित स्त्री - पुरूषों की समस्या को लेखिका ने अपने नाटक ' ओम् क्रांति क्रांति ' और ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' में चित्रित किया है। आज स्वच्छंदी जीवन - यापन करने के लिए स्त्री - पुरूष अविवाहित रहना ही पसंद करते हैं। इसके साथ - साथ स्वच्छंदी जीवन - यापन करनेवाले स्त्री - पुरूषों को किसी के अधिपत्य में रहना अच्छा नहीं लगता। फलस्वरूप प्रस्तुत समस्या पनप रही है। ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में चित्रित मिस सिंह इस समस्या का प्रतिनिधिक पात्र है।

मकान अभाव की समस्या को लेखिका ने ' सुनो शेफाली ' और ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटकों में चित्रित किया है। लेखिका ने प्रस्तुत समस्या का समाधान करते हुए ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में माधोसिंह को नगरों में मकान का अभाव होने के कारण अपने पैतृक गाँव में रहने के लिए जाते हुए दिखाया है। प्रस्तुत समस्या का निराकरण करने के लिए लेखिका ने गाँव जाने की ओर प्रेरित किया है। नगरों की तुलना में ग्रामों में मकान सहजता से उपलब्ध होते हैं।

परित्यक्ता की समस्या को लेखिका ने ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में नीति के रूप में चित्रित किया है। नीति को मां - बाप पर आश्रित रहना पड़ता है। नीति जैसी परित्यक्ताओं का जीवन अंधकारमय हैं। जिन्हें आत्महत्या ही करनी पड़ती है। यही परित्यक्ताओं के जीवन की शोकांतिका है।

' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में अधिकारियों द्वारा स्त्रियों के लैंगिक शोषण की समस्या दिखाई देती है। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा उनके अधीनस्थ काम करनेवाली स्त्रियों के लैंगिक शोषण करने पर उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता है।

संवेदनशील भावुक कुसुम कुमार की नजरों से राजनीतिक क्षेत्र की कुछ समस्या नहीं छूट पायी हैं। सुविधाभोगी राजनेताओं की समस्या की ओर लेखिका का ध्यान गया है। उन्होंने प्रस्तुत समस्या को अपने द्वारा लिखित ' दिल्ली ऊँचा सुनती है ' नाटक में चित्रित किया है। प्रस्तुत समस्या के माध्यम से लेखिका ने राजनेता, राजनीति को अपनी बपौती समझकर जनता के पैसों पर ' ऐशोआराम ' का जीवन जीते हैं, जिसकी लेखिका ने पोल खोल दी है। लोकतंत्र म चुनाव एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया होती है, लेकिन चुनाव में राजनेता लोग कैसे काले कारनामें करते हैं, इसका चित्रण कुसुम कुमार ने ' सुनो शेफाली ' नाटक में किया है।

मानव जीवन में ' अर्थ ' महत्त्वपूर्ण है, जिसके अभाव में मनुष्य जीवन निरर्थक है। प्रस्तुत कथन से प्रेरित होकर लेखिका ने अपने नाटकों में अर्थाभाव की समस्या को काफी गंभीरता के साथ चित्रित किया है। अर्थाभाव के कारण विजातीय विवाह करना पडता है (किरन - बकुल का विवाह

- ' सुनो शेफाली ' नाटक) साधन सुविधाओं का अभाव, गरीबी, बेकारी आदि समस्याओं से जूझना पड़ता है।

प्रशासनिक समस्या की ओर भी लेखिका का ध्यान गया है। सरकार जनता के लिए ही होती है, लेकिन सरकारी कार्यालयों में अभिव्याप्त लालफीताशाही की समस्या को लेखिका ने सरकार एवं जनता के बीच की आज की गंभीर समस्या के रूप में चित्रित किया है। सेवा - निवृत्त माधोसिंह को अपने अधिकार का निवृत्ति- वेतन पाने के लिए दर - दर की ठोकरें खानी पड़ती है। जिसमें वह इहलोक की यात्रा समाप्त करता है। यही प्रस्तुत समस्या की गंभीरता है।

शिक्षा जैसा पावन क्षेत्र भी आज नयी - नयी समस्याओं से घिरता जा रहा है। कुसुम कुमार की नज़रों से अध्यापकों की उत्तरदायित्वहीनता, छात्रों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता आदि समस्याएँ नहीं छूट पायी। प्रस्तुत समस्या का चित्रण ' ओम् क्रांति क्रांति ' नाटक में हुआ है।

उपलब्धियाँ -

कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों का अध्ययन करने के उपरान्त जो महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त हुए है, वे इस प्रकार है -

1. कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन लेखिका के अनुभव जगत् का लेखा- जोखा है, जो यथार्थ परिस्थिति का वस्तुनिष्ठ रूप प्रस्तुत करता है।
2. कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटकों में राजनेताओं के स्वार्थनीति का पर्दाफाश करके यथार्थ पर प्रकाश डाला है।
3. कुसुम कुमार के विवेच्य नाटकों में सीमित पात्र संख्या, पात्रानुकूल संवाद, परिस्थितिनुकूल भाषा का प्रयोग आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं।
4. कुसुम कुमार के विवेच्य नाटक दर्शकों , पाठकों को विचार करने को प्रवृत्त करता है। विवेच्य नाटकों की यह सबसे बड़ी उपलब्धि है।
5. कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटकों में नारी पात्रों को विशेष महत्व प्रदान किया है।
6. कुसुम कुमार ने विवेच्य नाटकों में अर्थाभाव से पीड़ित परिवार का दर्दनाक चित्रण किया है।

अनुसंधान की नई दिशाएँ -

वास्तव में अनुसंधान की अपनी सीमाएँ होने के कारण किसी भी विषय का अध्ययन संपूर्ण और अंतिम नहीं होता। नई दृष्टि, नया परिवेश आदि के कारण प्रत्येक विषय को अनेक कोनों से अनेक रूपों में देखा जा सकता है। कुसुम कुमार के नाट्य - साहित्य का अध्ययन - अनुसंधान विविध दिशाओं - प्रकारों - दृष्टि से किया जा सकता है। जैसे -

1. कुसुम कुमार के नाट्य - साहित्य में समाज जीवन।
2. कुसुम कुमार के नाटकों में मंचीयता।
3. कुसुम कुमार के नाटकों में प्रयोगधर्मिता।
4. कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित नारी जीवन।

5. कुसुम कुमार के नाटकों में चित्रित समस्याएँ।
6. कुसुम कुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए हैं, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। मेरे अपने शोध विषय के सीमा होने के कारण उक्त विषयों को स्पर्श नहीं कर सका हूं। भविष्य में आनेवाले शोधार्थी इन विषयों पर शोध कार्य संपन्न कर सकते हैं।